सुबोध

हस्त रेखा

डॉ॰ नारायणदत्त श्रीमाली

44Books.com

ज्योतिष में हस्तरेखा-शास्त्र सबसे कठिन माना गया है। ज्योतिष के सुप्रसिद्ध विद्वान् डॉ० नारायण दत्त श्रीमाली ने इस विज्ञान को चित्रों के माध्यम से इतनी सरल भाषा में समझा दिया है कि इस विषय के अनभिज्ञ व्यक्ति को भी ज्योतिष में रुचि हो जाती है।

हमारा दावा है कि इसके मनन से पाठक न केवल सड़क-किनारे के ठगों से बचे रहेंगे बल्कि अपना एवं अपने मित्रों-परिचितों के जीवन भी हाथ की रेखाओं से पढ़ सकेंगे और अपने क्षेत्र में लोकप्रियता व प्रसिद्धि का साधन भी पा जायेंगे।

44Books.com

4Books.com

ज्योतिष में हस्तरेखा-शास्त्र सबसे कठिन माना गया है। ज्योतिष के सुप्रसिद्ध विद्वान् डॉ० नारायण दत्त श्रीमाली ने इस विज्ञान को चित्रों के माध्यम से इतनी सरल भाषा में समझा दिया है कि इस विषय के अनभिज्ञ व्यक्ति को भी ज्योतिष में रुचि हो जाती है।

हमारा दावा है कि इसके मनन से पाठक न केवल सड़क-किनारे के ठगों से बचे रहेंगे बल्कि अपना एवं अपने मित्रों-परिचितों के जीवन भी हाथ की रेखाओं से पढ़ सकेंगे और अपने क्षेत्र में लोकप्रियता व प्रसिद्धि का साधन भी पा जायेंगे।

44Books.com

44Books.com

44Books.com

सुबोध पब्लिकेशन

44Books.com

सुबोध हस्त रेखा

डा० नारायणदत्त श्रीमाली

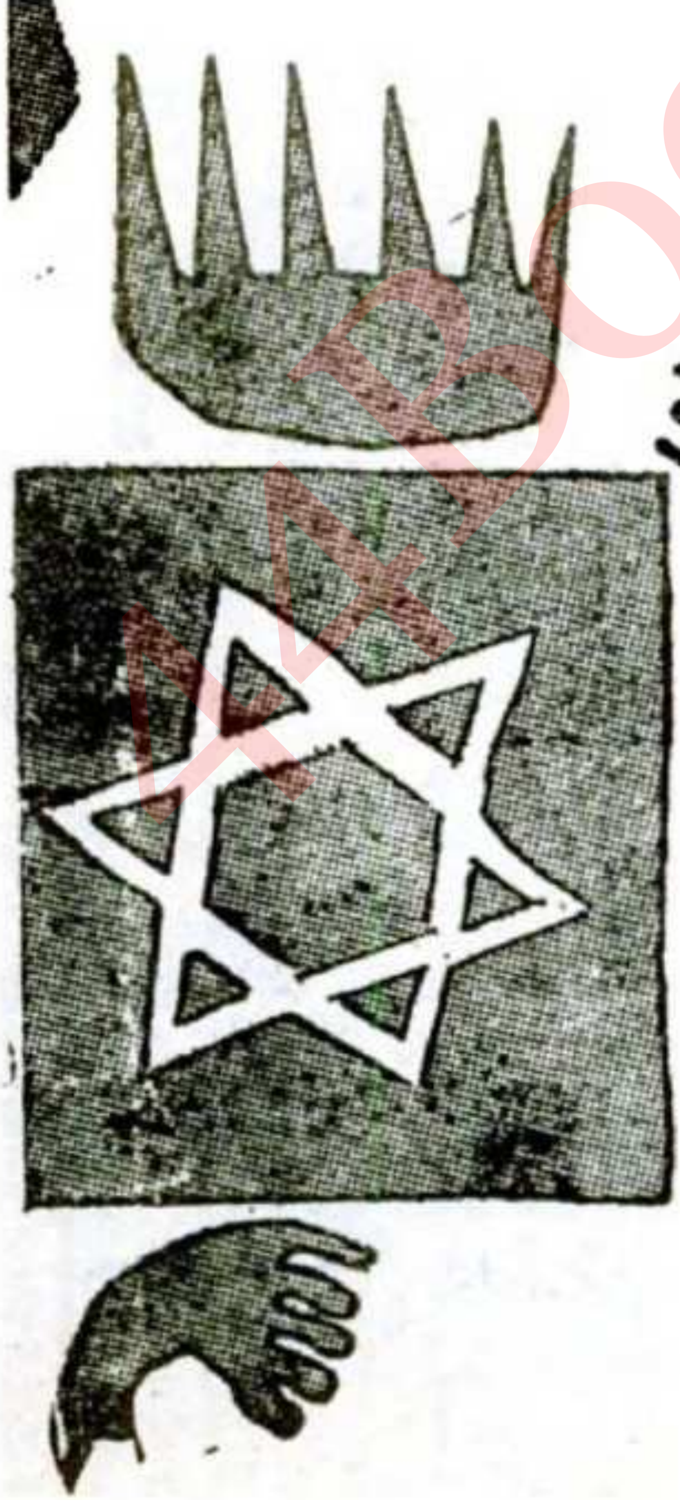

44Books.com

44Books.com

© सुबोध पॉकेट बुक्स

ISBN: 978-81-7078-079-3

Rs 15.00

सुबोध पब्लिकेशन्स, २/३ बी, अंसारी रोड, नई दिल्ली-२ / संस्करण : १९९२ / मुद्रक : जयमाया आफसेट, शाहदरा, दिल्ली-३२

HAST REKHA : Dr. Narain Datt Shrimali

44Books.com

44Books.com

दो शब्द

ज्योतिष में सामुद्रिक शास्त्र सर्वाधिक दुष्कर और कठिन माना गया है। रेखाओं को पढ़ पाना और तदनुसार सही-सही अर्थ निकाल लेना अत्यन्त परिश्रम, प्रतिभा और अध्ययन की अपेक्षा रखता है। मैंने इस पुस्तक में इसी जटिल और दुरूह विषय को सरल-से-सरल बनाकर सर्वसाधारण के लिए बोधगम्य बनाने का प्रयास किया है।

मैंने इस पुस्तक में कुछ विशेषताएँ रखी हैं—एक तो यह कि प्रत्येक विषय को चित्रों के माध्यम से बोधगम्य बनाकर समझा जाय; दूसरे, इस विवेचन का पुष्टि में जीवन से अनुभूत उदाहरण देकर कथन को प्रामाणिक बनाया जाय, जिससे न केवल विषय के समझने में सुविधा रहे, अपितु उस समझ में एक दृढ़ता उत्पन्न हो सके; तीसरे, मैंने विषय को पूर्णत शास्त्रसम्मत रखने का प्रयास किया है।

कुछ अध्याय इसमें ऐसे दिये हैं, जो सम्भवत: पहली बार प्रकाश में आ रहे हैं; अभी तक सामुद्रिक शास्त्र पर प्रकाशित पुस्तकों में कहीं भी इन विषयों पर लिखी सामग्री देखने को नहीं मिली। घटनाओं का काल निर्धारण, हस्त-रेखाओंसे जन्म-तारीख व जन्म-पत्र बनाना आदि विषय अभी तक सर्वथा गोपनीय थे, जिन्हें पाठकों के हितार्थ पहली बार प्रकाश में लाया जा रहा है।

मेरी ज्योतिष-सम्बन्धी पुस्तकें पाठकों में अत्यन्त लोकप्रिय रहीं, और उन्हें प्रत्येक पुस्तक में कुछ नवीनताएँ मिलीं, यह उनके नितप्रति आते पत्रों से ध्वनित है। मैं उन्हें धन्यवाद देता हूँ, और आभारी हूँ प्रकाशक महोदय का, जिनकी लगन, तत्परता और सहयोग से ही यह पुस्तक इतने सुन्दर रूप में आप तक पहुँच सकी है।

नारायणदत्त श्रीमाली

This One
0N24-9WS-76K7

4OBooks.com

विषय-सूची

१. प्रवेश ११—१५

सामुद्रिक शास्त्र और ज्योतिष; सामुद्रिक की ऐतिहासिकता; मानव-विकास—गुण, अवयव, आकृतियाँ तथा स्वभाव; हाथ, हथेली और रेखाएँ; हाथ के अध्ययन-हेतु मुख्य निर्देश।

२. हाथ १५—२६

सामान्य जानकारी; त्वचा—कोमलता, कठोरता, रूक्षता, रंग आदि; हाथ की बनावट; सात प्रकार के हाथ, उनके गुण, उनका वर्गीकरण और संबंधित फल-विवेचन; निष्कर्ष।

३. अंगूठा, उँगलियाँ और नाखून २६—४३

तर्क और इच्छा-शक्ति का प्रधान केन्द्र; अंगूठों के भेद; विभिन्न आकृतियों के अंगूठे और गुण-दोष; अंगूठे के भाग—पोरुआ तथा उनके गुण-दोष; उँगलियाँ—तर्जनी, मध्यमा, अनामिका, कनिष्ठिका; प्रत्येक उँगली का विवेचन; उँगलियों के सम्बन्ध में विशेष तथ्य; उँगलियों पर पाये जाने वाले चिह्न व उनका विवेचन; नाखून—नाखूनों के भेद, उन पर पाये जाने वाले चिह्न तथा फल-विवेचन।

४. पर्वत ४४—७३

पर्वत और पर्वतों के भेद; पर्वतों से सम्बन्धित ग्रह तथा उनका विवेचन; ग्रहों के क्षेत्र; प्रत्येक ग्रह से संबंधित मुख्य बातें; फल-विवेचन एवं निष्कर्ष; पर्वत-युग्म, विवेचन व फल-कथन; पर्वतों पर अंकित चिह्न व उनका प्रभाव; धनात्मक पर्वत, ऋणात्मक पर्वत; निष्कर्ष।

44Books.com

५. रेखाएँ ७३—८०

सामान्य परिचय ; मुख्य रेखाएँ—जीवन-रेखा, मस्तक-रेखा, हृदय-रेखा, सूर्य-रेखा, भाग्य-रेखा, स्वास्थ्य-रेखा, विवाह-रेखा, प्रत्येक रेखा का परिचय व फल-विवेचन; गौण रेखाएँ—गुरु-रेखा, मंगल-रेखा, शनि-वलय, रवि-वलय, शुक्र-वलय, चन्द्र-रेखा, प्रतिभा-रेखा, यात्रा-रेखा, संतति-रेखा, मणिबंध-रेखाएँ, आकस्मिक-रेखाएँ, उच्चपद रेखाएँ आदि, प्रत्येक रेखा का विवेचन, फल-कथन ; रेखाओं के भेद, रेखाओं के सम्बन्ध में मुख्य तथ्य।

६. रेखाओं के उद्‌गम-स्थान तथा परिचय ८०—८८

रेखाएँ तथा हथेली में उनके उद्‌गम-स्थान; जीवन-रेखा, मस्तिष्क-रेखा, हृदय-रेखा, सूर्य-रेखा, भाग्य-रेखा, स्वास्थ्य-रेखा, विवाह-रेखा; सभी के उद्‌गम-स्थलों का विवेचन ; गौण रेखाएँ तथा उनके उद्‌गम-स्थल, अवसान-स्थल, विवेचन ; निष्कर्ष।

७. जीवन-रेखा ८८—९६

सामान्य परिचय; उद्‌गम और विकास ; पथ-चिह्न आदि ; परिवर्तनीय स्वरूप; जीवन-रेखा के स्थल, जीवन-रेखा पर पाये जाने वाले चिह्न, प्रभाव तथा फल-विवेचन ; जीवन-रेखा और प्रभावक-रेखाएँ; जीवन-रेखा के सम्बन्ध में नूतन तथ्य; निष्कर्ष।

८. मस्तिष्क-रेखा ९६—१०४

सामान्य-परिचय; मस्तिष्क-रेखा के विभिन्न उद्‌गम-स्थल; प्रत्येक उद्‌गम-स्थल का संक्षिप्त परिचय ; मस्तिष्क-रेखा पर पाये जाने वाले चिह्न-प्रभाव तथा फल-विवेचन ; मस्तिष्क-रेखा और प्रभावक रेखाएँ; मस्तिष्क-रेखा के सम्बन्ध में नूतन तथ्य ; प्रतिभा-रेखा ; निष्कर्ष।

९. हृदय-रेखा १०५—११४

सामान्य परिचय ; हृदय की चार अवस्थाएँ ; उद्‌गम-स्थल तथा

A4Books.com

उनका विवेचन ; हृदय-रेखा पर पाये जाने वाले चिह्न, प्रभाव तथा फल-विवेचन; हृदय-रेखा तथा संबंधित प्रभावक रेखाएं; हृदय-रेखा से संबंधित नूतन तथ्य, फलादेश; निष्कर्ष ।

१०. यश-रेखा (सूर्य-रेखा) ११४—१२४

सामान्य परिचय ; यश-रेखा के उद्गम एवं अवसान-स्थल उनके प्रकार, तथा संबंधित फलादेश; यश-रेखा पर पाये जाने वाले चिह्न-प्रकार, प्रभाव तथा फल; यश-रेखा तथा प्रभावक रेखाएं; यश-रेखा से संबंधित नूतन तथ्य; फल-विवेचन; निष्कर्ष ।

११. भाग्य-रेखा १२४—१३८

सामान्य परिचय; भाग्य-रेखा के संकेत ; भाग्य-रेखा के ग्यारह उद्गम-स्थल, संबंधित जानकारी तथा फल-विवेचन ; भाग्य-रेखा पर पाये जाने वाले विशेष चिह्न ; फलादेश ; भाग्य-रेखा तथा प्रभावक रेखाएं ; भाग्य-रेखा से संबंधित कुछ तथ्य ; फलादेश ; निष्कर्ष ।

१२. स्वास्थ्य-रेखा १३९—१४५

सामान्य परिचय ; स्वास्थ्य-रेखा के उद्गम व अवसान-स्थल ; स्वास्थ्य-रेखा पर पाये जाने वाले चिह्न तथा संबंधित फल-विवेचन ; स्वास्थ्य-रेखा तथा विभिन्न रोग ; स्वास्थ्य-रेखा से संबंधित नूतन तथ्य ; फलादेश ; निष्कर्ष ।

१३. विवाह-रेखा १४५—१५३

सामान्य परिचय; विवाह-रेखा तथा प्रणय रेखा; प्रेम-रेखा तथा विलास-रेखा; विवाह-रेखा का उद्गम व फल; विवाह-रेखा पर पाए जाने वाले चिह्न तथा फल-विवेचन ; विवाह-रेखा से संबंधित नूतन तथ्य तथा फलादेश ; सन्तान-रेखा ; विवाह-आयु निकालने का तरीका ; निष्कर्ष ।

4Books.com

१४. गौण-रेखाएँ १५३—१६६

सामान्य परिचय ; गौण रेखाओं का हस्तरेखा-विशेषज्ञ के लिए महत्त्व ; प्रमुख रेखाएँ— मंगल-रेखा ; गुरु-वलय ; शनि वलय ; रवि-वलय; शुक्र वलय ; चन्द्र-रेखा; प्रभावक रेखाएँ; यात्रा-रेखाएँ; विज्ञान रेखाएँ ; विद्या-रेखा ; भातृ-भगिनी-रेखा ; मित्र-रेखाएँ ; आकस्मिक रेखाएँ ; सुमन-रेखा ; मणिबन्ध-रेखाएँ ; शुक्र-रेखाएँ ; रहस्य क्रॉस ; बुध-वलय ; दुर्घटना-रेखाएँ ; त्रिकोण ; आयत ; प्रत्येक गौण-रेखा का परिचय तथा सम्बन्धित फल-विवेचन ; निष्कर्ष ।

१५. हस्त-चिह्न १६६—१८५

हाथ पर पाये जाने वाले प्रमुख चिन्ह तथा उनका प्रभाव । मुख्य चिह्न—त्रिभुज, क्रॉस, बिन्दु, वृत्त, द्वीप, वर्ग, जाल, नक्षत्र या तारा; प्रत्येक चिह्न का परिचय, तथा हथेली में विभिन्न स्थानों पर विभिन्न फल-विवेचन ; चिह्न से संबंधित विशेष तथ्य ; निष्कर्ष ।

१६. विशेष योग १८५—१८६

हथेली में पाये जाने वाले विशेष योग; राज्य योग ; लक्ष्मी-योग; प्रधान योग ; प्रचण्ड योग ; राज्याधिकारी योग ; कूटनीतिज्ञ योग ; कमिश्नर योग ; अधिकारी योग ; न्यायाधीश योग ; कानून योग; ब्रह्म-योग ; साधु योग ; महापुरुष योग ; ज्योतिषी योग ; साहित्यज्ञ योग; चिकित्सक योग; महालक्ष्मी योग ; कृषि योग ; प्रसिद्धि योग ; विज्ञान-योग; कलाकार योग ; संगीत योग ; दीर्घायु योग ; भाग्योन्नति योग ; पतिव्रता योग ; पराक्रमयोग ; शत्रुयोग ; तस्कर योग ; स्वार्थी योग ; प्रणय योग ; व्यभिचारी योग ; अकाल मृत्यु योग ; मातृहन्ता योग ; संपत्तिनाश योग ; कमल योग प्रत्येक योग का फल-विवेचन ; निष्कर्ष ।

१७. काल-निर्धारण १८६–१६४

हथेली पर पाई जाने वाली रेखाएँ तथा परिचय; प्रत्येक रेखा का समय निर्धारण करना ; ध्रुवांक निकालना ; ध्रुवांक से जीवन

4ABOOKS.com

44Books.com

की भावी घटनाओं का सही-सही समय निकालना ; निष्कर्ष ।

१८. हस्तचित्र लेने की रीति १९९—२१०

हस्तचित्र लेने का सही प्रकार ; सावधानियाँ ; कपूर के धुएं द्वारा चित्र उतारना ; प्रेस की स्याही द्वारा चित्र उतारना; फोटो द्वारा चित्र लेना ; विधियाँ ; विवेचन ।

१९. हस्तरेखाओं से जन्म-तारीख व जन्म-समय निकालना १९८—२०४

हस्त-रेखाओं से जन्म-संवत् निकालना ; जन्म-मास-निर्णय ; भारतीय मास या अंग्रेजी तारीख निकालना ; पक्ष-ज्ञान; जन्म-तिथि-ज्ञान ; जन्म-वार-ज्ञान ; जन्म-समय-ज्ञान ; सही विवेचन ।

२०. नष्ट जन्मपत्र बनाना २०५—२०८

हथेली पर राशियों का परिचय तथा उनका स्थान-ज्ञान ; रेखाओं द्वारा ग्रहों का स्वरूप-ज्ञान ; राशियों तथा ग्रहों का संयोग ;जन्मलग्न निकालना ; जन्म-कुण्डली में समस्त ग्रहों का स्थान-निर्धारण : ग्रह-अंश निकालना ; विवेचन व निष्कर्ष ।

२१. पंचांगुली देवी २०८—२०९

हाथ की अधिष्ठात्री पंचांगुली देवी; उसका परिचय; उसके पूजन की विधि; उसका ध्यान; उसका मूल मंत्र ; मंत्र साधने का प्रकार ; प्रयोग व फल ; निष्कर्ष ।

उपसंहार २१०—२११

आप और आपका सामर्थ्य ; उद्बोधन ।

44Books.com

१

प्रवेश

सामुद्रिक ज्योतिष मानव की वे प्रारंभिक वैज्ञानिक उपलब्धियाँ हैं, जो उसे सभ्यता के प्रथम चरण में ही प्राप्त हुईं। मानव-मन सतत जिज्ञासाशील रहा है, और यह जिज्ञासा-भावना ही उसे बर्बर युग से अणुयुग में ला सकने में समर्थ हुई है। अँधेरे और अज्ञान में भटकने वाला यह आदि मानव आज सभ्यता एवं वैज्ञानिक उपलब्धियों के उस छोर पर जा खड़ा हुआ है जहाँ वह चन्द्रमा, मंगल और बृहस्पति के लोकों को भी नापने में समर्थ हो सका है।

मनुष्य और पशु के बीच विभाजक रेखा उसका विवेक है। जहाँ यह विवेक छूटा, वहाँ मनुष्य और पशु में कोई भेद नहीं रह जाता क्योंकि भूख, काम और निद्रा ऐसी सहज क्रियाएँ हैं, जो दोनों में समान रूप से पाई जाती हैं; परन्तु बुद्धि या मस्तिष्क ही एक ऐसी विशेषता मनुष्य के पास है, जिससे वह निरन्तर ऊपर-ही-ऊपर उठता गया है।

हथेली पर पाई जाने वाली रेखाएँ इसी मस्तिष्क का क्रियात्मक रूप हैं, उसका सांकेतिक रेखांकन हैं। जिस प्रकार मस्तिष्क जीवन एवं विश्व के घात-प्रतिघातों को ग्रहण करता रहता है, ठीक उसी रूप में उसका रेखांकन हथेली पर होता रहता है। यद्यपि यह परिवर्तन इतना सूक्ष्म होता है कि सहज ही देख पाना सम्भव नहीं, परन्तु दक्ष एवं अनुभवी रेखाविद् इस परिवर्तन को भी पहचान लेते हैं, और सही-सही फलादेश कह सकने में समर्थ होते हैं।

बालक जब जन्म लेता है, तो उसके हाथ की रेखाएँ अस्त-व्यस्त, विरल और अस्पष्ट-सी होती हैं; साथ ही उसकी मुट्ठियाँ भी बंद रहती हैं, परन्तु फिर भी, उसकी हथेली में भी तीन रेखाएँ—हृदय-रेखा,

4Books.com

मानस-रेखा और जीवन-रेखा—स्पष्ट होती हैं। आश्चर्य की बात तो यह है कि ये तीनों रेखाएँ तर्जनी के मूल भाग के पास से होकर गुजरती हैं, अर्थात् तर्जनी का मूल भाग वह केन्द्र है, जो इन सबको संचालित करता रहता है। वस्तुतः यह केन्द्र विश्व-भौतिकी ऊर्जा को अपने-आप में स्वीकारता हुआ, ग्रहण कर पूरी हथेली में फैला देता है और अपना वृत्त पूरा करके पुनः उसी केन्द्र पर पुञ्जीभूत हो जाता है। इसी ऊर्जा को कुछ विद्वान् चिन्मय तत्त्व, कुछ ईश्वर, कुछ विद्युत् तो कुछ ग्रहं-रश्मियाँ बताते हैं, यह है वही प्राणदायिनी शक्ति जो पूरे जीवन को संचालित करती है।

पाश्चात्य विद्वान् डब्ल्यू० जी० बेनहम ने उपर्युक्त तथ्य को वैज्ञानिक रूप देते हुए बताया है कि बच्चा माँ के गर्भ में सक्रिय रूप में नहीं रहता, परन्तु ज्योंही वह जन्म लेता है, और बाह्य सांसारिक वातावरण में प्रवेश करता है, वह स्वयमेव स्वतन्त्र इकाई बन जाता है। इसी क्षण से बालक का मस्तिष्क क्रियाशील हो जाता है, और उसके साथ-ही-साथ उसका रक्त-संचालन भी प्रारम्भ हो जाता है। इन दोनों क्रियाओं—मस्तिष्क का क्रियाशील होना, और शरीर में स्वस्थ रक्त का संचालन—का सीधा प्रभाव शरीर के अन्य अवयवों पर भी पड़ता है। फलस्वरूप वे गतिवान् हो उठते हैं और यही कारण है कि शनैः-शनैः सर्वप्रथम उसकी बन्द मुट्ठियाँ खुल जाती हैं। इसी क्षण से मस्तिष्क से जीवनी शक्ति के प्रभावानुरूप हथेली पर रेखाओं का उदय होता है, और वे प्रबल तथा पुष्ट होने की दिशा में अग्रसर होती हैं।

अत्यन्त प्रारम्भिक अवस्था में बालक का व्यवहार पशुवत् ही होता है—सोना, जागना और खाना, ये तीन क्रियाएँ ही मुख्य रूप में रहती हैं। इन दिनों वह किसी भी वैचारिक अवस्था में नहीं होता, परन्तु धीरे-धीरे अभ्यास एवं वातावरण से वह समझने लगता है; भले-बुरे की पहचान करने लगता है; अपने-पराये का ज्ञान होता है, और स्थितियों के अनुरूप हँसने-रोने की क्रियाओं में आगे बढ़ता है। इसके साथ-ही-साथ उसकी हथेली की रेखाएँ भी पुष्टता एवं स्पष्ट रूप ग्रहण करने लगती हैं।

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि हथेली की रेखाएं परिवर्तनशील

4Books.com

हैं। ज्यों-ज्यों मानसिक प्रवृत्तियों में स्थिरता आने लगती है, त्यों-त्यों उसकी रेखाओंमें भी स्थिरता का आभासहोने लगताहै। अत: ज्योतिष में गणित की तरह निश्चितता नहीं रहती। मस्तिष्क में प्रवृत्तियों की तीव्रता के अनुसार रेखाओं का रूप भी बदलता रहता है, अत: काफी दूर की भविष्यवाणियाँ करना हस्तरेखाविद् के लिए संभव नहीं। इस दृष्टि से देखा जाय, तो सामुद्रिक शास्त्र गणित की निश्चितता की अपेक्षा मनोविज्ञान के अधिक निकट है। सोचने और तदनुसार कार्य करने से रेखाओं में परिवर्तन संभव है। वय-प्राप्ति के साथ-साथ पुरानी रेखाएँ मिट जाती हैं, या बदलकर नया रूप धारण कर लेती हैं। कुछ विद्वान् मानते हैं कि सात वर्षों में हथेली की रेखाओं में पूर्णत: परिवर्तन आ जाता है; परन्तु मेरे अनुभव के अनुसार हथेली की रेखाओं में निरन्तर पल-प्रतिपल परिवर्तन होता रहता है, और कुछ महीनों या दिनों में भी रेखाओं में परिवर्तन स्पष्ट देखा जा सकता है।

पूरी हथेली में तीन रेखाएँ ऐसी हैं, जो अपरिवर्तित रहती हैं। हृदय, मानस और जीवन-रेखा पर परिवर्तन का कोई प्रभाव दृष्टि-गोचर नहीं होता, क्योंकि मूलत: व्यक्तित्व के कुछ तत्त्व जन्मजात और वंशानुक्रम से पैतृक होते हैं। हाँ, इन रेखाओं को प्रभावित करने वाली सहायक रेखाएँ बनती और बिगड़ती रहती हैं।

जैसाकि मैं ऊपर कह चुका हूँ, एक कुशल हस्तरेखाविद् के लिए सही मनोविज्ञान का ज्ञान होना अत्यन्त आवश्यक है, साथ ही हाथ का अध्ययन करते समय आपकी दृष्टि वैज्ञानिक विवेचना से युक्त हो। व्यक्तित्व की कोई भी चेष्टा अकारण नहीं होती, क्योंकि प्रत्येक चेष्टा के पीछे संवेग होते हैं। यद्यपि वातावरण, शिक्षा एवं संस्कृति के फल-स्वरूप संवेगों में परिष्कार होता है, फिर भी संवेग अपनी मूलभूत विशेषता अपने-आप में संजोये रहते हैं, और मनुष्य इन्हीं संवेगों का पुञ्जीभूत स्वरूप है। मनुष्य की प्रत्येक चेष्टा भूत, भविष्य या वर्तमान से सम्बन्धित होती है, और इन्हीं संवेगों के स्वरूप का सही ज्ञान प्राप्त कर यदि हथेली की रेखाएँ पढ़ी जायँ, तो फलित शत-प्रतिशत सही उतरता है। मनुष्य में अपार संभावनाएँ हैं; अकल्पित क्षमताएँ हैं। एक कुशल हस्तरेखाविद् को चाहिये कि वह उन क्षमताओं का पता

44Books.com

लगावे, उनकी सम्भावनाओं को पहचाने और उनमें छिपी शक्तियों को जागृति करे। हस्तरेखा-विशेषज्ञ को केवल पंडित ही नहीं होना चाहिये, अपितु उसका व्यवहार एक मित्र और सलाहकार के अनुसार होना चाहिये। अशुभ के प्रति सचेत करते हुए भी मंगल एवं शुभ के प्रति आशान्वित भी करिये! संभावित विपत्तियों की जानकारी देते हुए उसके साहस एवं क्षमताओं को भी उजागर करिये! उसे मात्र भाग्य-वादी ही न बनाएँ, अपितु कर्मक्षेत्र में संघषरत बनने योग्य उसका निर्माण करिये! यही आपकी सफलता है, आपकी विशेषता है।

अन्त में, जबकि हम हथेली और रेखाओं का ज्ञान प्राप्त करने की दिशा में बढ़ें, कुछ ऐसी बातें हैं, जिनका पालन करना हमारे लिए आवश्यक है। अपने अनुभव के आधार पर मैं कुछ ऐसे बिन्दु प्रस्तुत कर रहा हूँ, जिनका पालन पाठकों की सफलता के लिए आवश्यक है।

(१) कभी भी उतावली में या बिना सोचे-समझे तुरन्त ही कोई भी निर्णय न दें। किसी भी एक चिह्न को देखकर तुरन्त फलाफल कह देना शुभ नहीं, क्योंकि कोई भी अकेला चिह्न पूरी हथेली का प्रतिनिबित्व नहीं करता। हथेली का सर्वांगीण अध्ययन करके ही फलादेश कहना विज्ञान-सम्मत है।

(२) यथासम्भव विरोधाभास से बचें। कभी-कभी हाथ में एक ही तथ्य को उजागर करने वाली शुभ और अशुभ दोनों ही रेखाएँ दिखाई देती हैं। ऐसी स्थिति में उस रेखा का उद्गम और उसकी सहा-यक रेखाओं का अध्ययन करके ही फलादेश कहना उचित है।

(३) यदि हाथ की रेखाओं में बुरे तथ्य दिखाई दे रहे हों तो उन्हें भी चौंकाने वाले ढंग से न कहिये, क्योंकि इससे सामने वाले पर मनोवैज्ञानिक रूप से बुरा असर पड़ता है; यदि कमजोर हृदय का व्यक्ति हो, तो उसके लिए अप्रिय सूचना सह पाना भी कठिन होता है। ऐसे तथ्य कहने से पूर्व हस्तरेखाविद् को चाहिए कि वह धीरे-धीरे सामनेवाले को तैयार करे, उसका मानस दृढ़ करे और फिर उसे कहे, साथ ही यह आश्वासन भी दे कि यदि इच्छाशक्ति प्रबल रही, तो यह अप्रिय तथ्य टल भी सकता है, अथवा इसका प्रभाव न्यून भी हो सकता है।

44Books.com

किसी एकाध पुस्तक को पढ़कर ही अपने-आपको पंडित मत समझिये ! रेखाओं का सिद्धान्त समझने के साथ-साथ उसका व्यावहारिक ज्ञान भी परमावश्यक है। बाजार में जो इस विषय में पुस्तकें उपलब्ध हैं, उनमें से मुझे कोई भी पुस्तक प्रामाणिक नजर नहीं आती। अधिकतर ऐसी पुस्तकें या तो अनुवादमात्र हैं, अथवा पाश्चात्य ज्योतिर्विदों का पिष्टपेषण। न तो वे परिश्रम से अध्ययन और अनुभव करते हैं, और न ही अनुभव को लेखनी से व्यक्त करते हैं। कीरो, सेंट जारमन, बेन्थम, नोएल जेक्विन आदि हस्तरेखा-विशेषज्ञों की पुस्तकें बाजार में उपलब्ध हैं, परन्तु इनमें से भी कोई पूर्णतया प्रामाणिक नहीं; अनुभव का अभाव इनमें भी दृष्टिगोचर होता है।

मैंने जीवन में हजारों नहीं लाखों हाथ देखे हैं, लाखों हाथों के प्रिंटों का अध्ययन किया है; इसमें स्वदेश तथा विदेश सभी जगह के व्यक्ति हैं, तथा समाज के सभी स्तर एवं श्रेणी के लोगों के हाथ देखने का अवसर मिला है, और समय-समय पर मैंने जो भविष्यवाणियाँ की हैं, वे शत-प्रतिशत ही उतरी हैं। पाठक देखेंगे कि अन्य पुस्तकों की अपेक्षा इस पुस्तक में कुछ नवीनता है, व्यावहारिक ज्ञान का अनुभव इसमें विद्यमान है, और विषय का विवेचन वैज्ञानिक पद्धति पर करके विषय को बोधगम्य बनाने की ओर प्रयत्न किया है।

हस्तरेखा-जिज्ञासुओं को चाहिए कि वे सिद्धान्तरूप में रेखाओं का ज्ञान प्राप्त करें, और फिर व्यावहारिक अनुभव प्राप्त करें, तभी वे फलादेश कह सकने में समर्थ होंगे और उनकी वाणी कालयजी बन सकेगी।

२

हाथ

कलाई की सीमा पर मणिबन्ध-रेखाओं से आगे उँगलियों के छोर तक का भाग हाथ कहलाता है और यही भाग हस्तरेखा के अध्ययन

44Books.com

44Books.com

का विषय है। इसके सिरे पर छोटी-छोटी हड्डियों से निर्मित उँगलिया होती हैं। इस क्षेत्र को 'मेटाटारसस' भी कहा जाता है। यह पूरा क्षेत्र, इस पर निर्मित प्रत्येक रेखा, बारीक जाल, तन्तु, उभरा और दबा हुआ भाग तथा उँगलियों की केश-सूक्ष्म-रेखाएँ भी हमारे अध्ययन का विषय हैं, अतः हथेली का अध्ययन करते समय पूरी सावधानी बरतना परमावश्यक है।

त्वचा—हथेली की त्वचा, लचक और रंग, निर्णय तक पहुँचाने में काफी सहायता प्रदान करते हैं। आप किसी का भी हाथ ज्योंही अपने हाथ में लेते हैं, आपका पहला अनुभव स्पर्शात्मक होता है। त्वचा व्यक्ति की नैसर्गिक प्रवृत्ति बताने में सक्षम होती है। यदि हाथ कर्कश, भारी और कठोर हो तो आप एक ऐसे व्यक्ति के सामने हैं, जो पाशविक वृत्तियों से प्रभावित है; उसका जीवन आदिम संवेगों से संचालित है। उसके व्यवहार, कार्य और चरित्र में भी एक प्रकार का खुरदरापन होगा; उसमें सलीके का अभाव होगा, तथा मुँहफट होने के साथ-साथ कर्कश व्यक्तित्व वाला होगा। ये वे व्यक्ति होते हैं, जो जीवन-यापन के लिए कठोर परिश्रम करते हैं; संवेदनाओं की अपेक्षा मूल संस्कारों से अधिक बँधे हुए होते हैं।

इसके विपरीत कुछ व्यक्तियों की हथेलियाँ नर्म, लचकदार और लालिमा लिये हुए होती हैं। ऐसे व्यक्ति पूर्णतः आत्मकेन्द्रित होते हैं। जीवन के कठोर संघर्षों का मुकाबिला करने से ये घबराते हैं। कल्पना के क्षेत्र में विचरण करने वाले ये लोग शारीरिक श्रम की अपेक्षा मानसिक श्रम में ही ज्यादा विश्वास करते हैं। ये जीवन में ऐश्वर्यता चाहते हैं; इनकी अभिरुचि उन्नत होती है, पर ये कठोर श्रम नहीं कर सकते।

कुछ त्वचाएँ इन दोनों का सम्मिश्रण-सा लिये हुए होती हैं, जो न अधिक कठोर होती हैं,और न अधिक लचीलीऔर नर्म। ऐसे व्यक्ति जीवन में सफलता के सन्निकट कहे जा सकते हैं। इनमें व्यावहारिकता एवं कल्पनाशीलता का अद्भुत सम्मिश्रण होता है। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में ये सफलता के द्वार पर दस्तक देने में प्रवृत्त रहते हैं। इनके निर्णय विवेकपूर्ण तथा कार्य में स्वच्छता एवं सुघड़ता होती है।

4Books.com

44Books.com

44Books.com

हथेली का रंग भी मानव के आन्तरिक जीवन का प्रतिबिम्ब होता है। हथेली को अपने दोनों हाथों में लेकर थोड़ी-सी शक्ति के साथ दबा-कर छोड़ दीजिये। दो-तीन बार ऐसा करिये, आप देखेंगे कि हथेली का रंग अपनी स्वाभाविक स्थिति में आ गया है। यही वह स्थिति है, जबकि आप स्पष्ट रूप से हथेली का रंग, त्वचा, उसकी मांसपेशियों की नर्मी, कड़ाई और मांसलता का अनुभव कर सकते हैं।

एक प्रकार से हथेली का रंग मानव के सामान्य रक्त-प्रवाह का द्योतक है। जिन हथेलियों का रंग ललाई लिये हुए नहीं होता, वे व्यक्ति निश्चय ही शारीरिक एवं मानसिक रूप से दुर्बल एवं रुग्ण होते हैं। उनकी हथेलियां ठंडी-सी होती हैं और ये एक प्रकार के रहस्य का लबादा ओढ़े हुए रहते हैं।

गुलाबी हथेली स्वस्थता एवं नीरोगिता की दिग्दर्शक है। ऐसे व्यक्ति शारीरिक एवं मानसिक, दोनों ही दृष्टियों से स्वस्थ कहे जा सकते हैं। इनमें समस्त मानवोचित गुण—क्षमा, दया धैर्य, ममत्व, प्रेम, स्नेह—पाये जाते हैं। जीवन को ये एक खेल की तरह समझते हैं, और बाधाओं तथा संकटों का हँसकर सामना करते हैं। जीवन के प्रति इनमें ललक और गर्मजोशी होती है तथा प्रत्येक कार्य के प्रति जिज्ञासा की भावना रखते हैं। ये स्वभाव से हँसमुख, मिलनसार और समाज में घुल-मिलकर जीने वाले होते हैं।

परन्तु अत्यधिक गुलाबी या लाल हथेलियां स्वस्थता की परि-चायक नहीं। ऐसे व्यक्ति उतावले होते हैं। किसी भी कार्य का आरम्भ तो ये शान से कर लेते हैं, पर कुछ ही समय बाद ये उससे ऊब जाते हैं और येन-केन-प्रकारेण कार्य को निबटाने की फिराक में रहते हैं। इनके जीवन और कार्य—प्रत्येक क्षेत्र में व्यर्थ की उतावली और हड़-बड़ी-सी बनी रहती है।

पीली हथेलियाँ व्यक्ति के शरीर में पित्त की अधिकता स्पष्ट करती हैं। ऐसे व्यक्ति स्पष्टतः निराशावादी होते हैं। प्रत्येक कार्य का अन्ध-कार-पक्ष ये पहले देखते हैं; जीवन के प्रति एक प्रकार से विरक्ति इनमें बनी रहती है। उदास, थके-थके-से तथा उचटे हुए स्वभाव के ये व्यक्ति जीवन में प्रायः असफल ही देखे गए हैं।

44Books.com

नीली या बैंगनी रंग की हथेलियाँ अशुद्ध रक्त-प्रवाह की द्योतक हैं। ऐसे व्यक्ति बीमार, आत्मकेन्द्रित, उदास, चिड़चिड़े और निराशा-वादी प्रवृत्ति-प्रधान होते हैं। जीवन इन्हें बोझ-सा लगता है और किसी प्रकार उसे ढोना ही अपने कर्तव्य की इतिश्री समझते हैं।

हथेली में कई जगह हड्डियों के जोड़ हैं। इन जोड़ों को भी ध्यान-पूर्वक देखना चाहिए। यदि ये जोड़ लचकदार होते हैं, तो व्यक्ति संतुलित दिमाग का समझना चाहिए। विपरीत परिस्थितियों में भी अपने-आपको ढालने की उसमें क्षमता होती है तथा संकटों एवं बाधाओं के बीच से भी वह हँसकर आगे बढ़ जाता है।

हाथ की बनावट—पर्वतों एवं आकृति की संरचना के आधार पर समस्त मानवों की हथेलियाँ सात वर्गों में बाँटी जा सकती हैं। हथेली के पीछे की तरफ से स्वाभाविक स्थिति में रखकर यदि ध्यान-पूर्वक देखा जाय, तो ये वर्ग आसानी से समझ में आ सकते हैं। ये सात प्रकार हैं–

१. प्रारम्भिक प्रकार (Elementary type)
२. वर्गाकार हाथ (Square type)
३. दार्शनिक हाथ (Philosophical type)
४. कर्मठ हाथ (Spatulate type)
५. कलात्मक हाथ (Conic of Artistic type)
६. आदर्श हाथ (Psychic of Idealistic type)
७. मिश्रित हाथ (Mixed type)

वास्तविक रूप में देखा जाय, तो हाथों की बनावट मुख्यतः तीन प्रकार की होती है, परन्तु सुविधा के लिए आधुनिक हस्तरेखा-विदों ने इसे फैलाकर सात वर्गों में बाँट लिया है। वस्तुतः हाथ होते हैं—१. सात्विक, २. राजस, और ३. तामस। परन्तु शुद्धरूप में इन तीनों में से कोई भी हाथ दृष्टिगोचर नहीं होगा, क्योंकि वर्ण-व्यवस्था तथा दूषित चरित्रों के फलस्वरूप अधिकतर मिश्रित हाथ ही दिखाई देते हैं। यदि इस त्रिगुणात्मक प्रकृति का प्रसारित रूप देखें, तो भी हाथों के सात वर्ग बनते हैं, जोकि इस प्रकार से हो सकते हैं—

१. सात्विक।

44Books.com

२. राजस।

३. तामस।

४. सात्विक-राजस मिश्रित।

५. राजस-तामस मिश्रित।

६. तामस-सात्विक मिश्रित।

७. सात्विक-राजस-तामस मिश्रित।

वस्तुतः जिस प्रकार से चेहरा मानव-हृदय का प्रतिबिम्ब होता है, ठीक उसी प्रकार किसी भी व्यक्ति की हथेली उसके पूर्ण जीवन को खोलकर सामने रख देती है। परन्तु आवश्यकता है अभ्यास एवं लगन की; निरन्तर अभ्यास के बाद तो हथेली, उसकी आकृति और संरचना देखकर ही उस व्यक्ति के बारे में बहुत-कुछ कहा जा सकता है।

पाठकों की सुविधा के लिए पहले निर्देशित सात प्रकार के हस्त-भेदों का संक्षेप में वर्णन प्रस्तुत किया जाता है—

१. प्रारम्भिक प्रकार (Elementary type)—प्रारम्भिक रूप में कहा जाने वाला यह हाथ खुरदुरा एवं भारी होता है। यह हाथ लगभग उस अवस्था का परिचायक है, जब आदिमानव पशुजन्य जीवन से ऊपर उठने की ओर चेष्टारत था। इस प्रकार के हाथ की बनावट बेडौल होती है, उँगलियाँ छोटी और घने केशों से गुम्फित होती हैं। ये व्यक्ति स्पष्टतः पशु एवं मानव की संधि-रेखा पर ही होते हैं। सभ्यता के विकास का प्रारम्भिक चरण इनमें पाया जाता है; जीवन में संस्कृति की अपेक्षा सभ्यता की नकल करने में प्रवृत्त रहते हैं। भोजन, वस्त्र और आवास, इन तीन आयामों से ही घिरे रहते हैं; इसके आगे बढ़कर न तो ये देखने की चिन्ता करते हैं, और न देख ही पाते हैं। श्रम ये करना चाहते नहीं; बुद्धि का प्रयोग इनके वश की बात नहीं होती। अधिकतर अपराधी-वर्ग का हाथ इसी कोटि में आता है।

२. वर्गाकार हाथ (Square type)—ऐसा हाथ जो स्पष्टतः जाना जा सकता है। हथेली की बनावट न्यूनाधिक रूप में चौकोर वर्ग की तरह होती है। इस प्रकार की हथेली में सावधानीपूर्वक एक

44Books.com

हाथों का वर्गीकरण

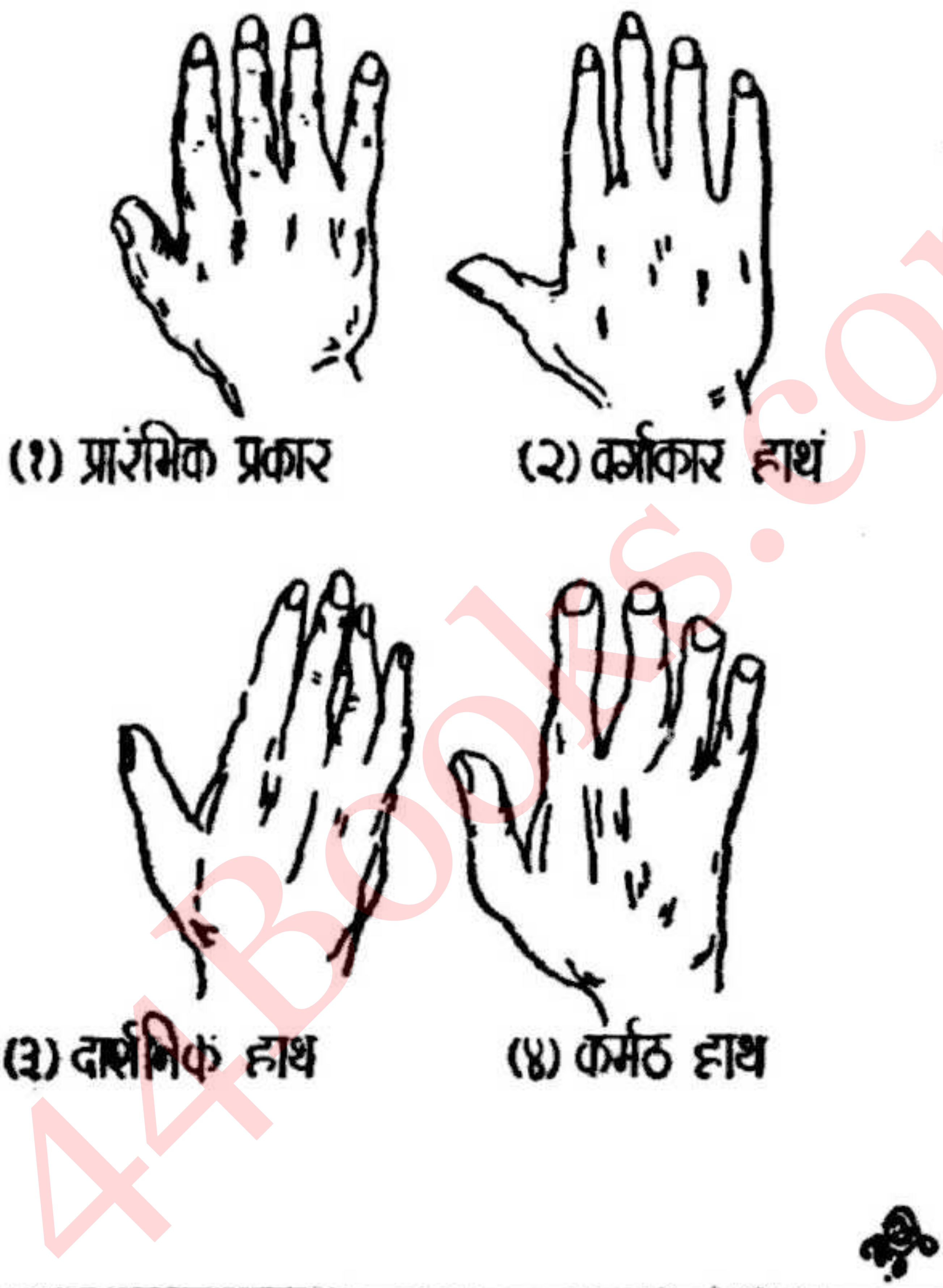

44Books.com

44Books.com

You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.

You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.

44Books.com

हाथों का वर्गीकरण

(५) कलात्मक हाथ

(६) आदर्श हाथ

(७) मिश्रित हाथ

44Books.com

You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.

हाथों का वर्गीकरण

44Books.com

4Books.com